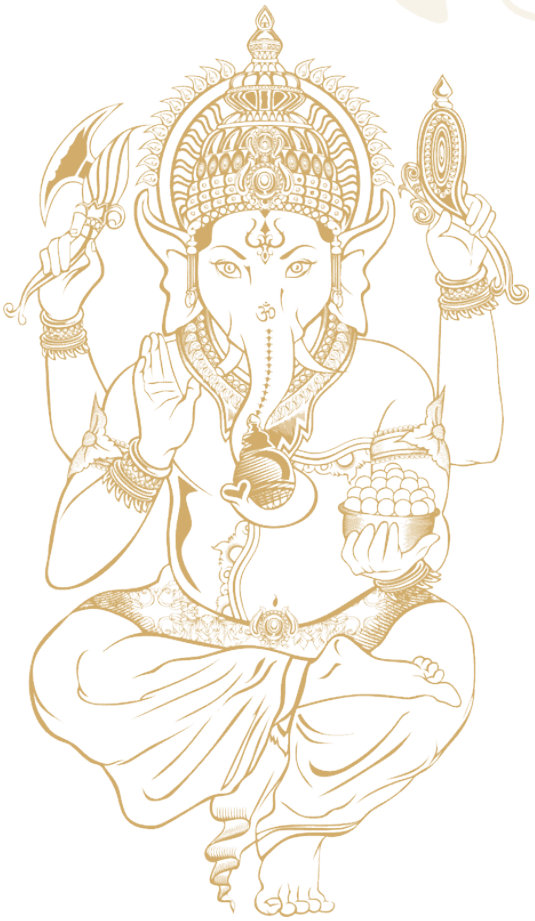

Mr.

03 Oct 2025

07:07 PM

Indore

Model: Baby-Horoscope **Order No: 119710901**

तिथि 03/10/2025 **समय** 19:07:00 **वार** शुक्रवार **स्थान** Indore **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:04
अक्षांश 22:42:00 उत्तर **रेखांश** 75:54:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:26:24 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	19:30:39 घं
वेलान्तर	00:10:59 घं
सूर्योदय	06:18:44 घं
सूर्यास्त	18:11:45 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	आश्विन
पक्ष	शुक्ल
तिथि	12
नक्षत्र	धनिष्ठा
योग	धृति
करण	बव

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	सिंह
नाड़ी	मध्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	जलचर
वर्ग	मार्जार
युँजा	अन्त्य
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	गी-गीत
पाया(रा.-न.)	ताम्र-ताम्र
होरा	मंगल
चौघड़िया	रोग

विंशोत्तरी

मंगल 4वर्ष 2मा 9दि
मंगल
03/10/2025
13/12/2029

	00/00/0000
	00/00/0000
	03/10/2025
शनि	14/06/2026
बुध	11/06/2027
केतु	07/11/2027
शुक्र	06/01/2029
सूर्य	14/05/2029
चन्द्र	13/12/2029

योगिनी

पिंगला 1वर्ष 2मा 11दि
पिंगला
03/10/2025
15/12/2026

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	03/10/2025
उल्का	24/01/2026
सिद्धा	15/06/2026
संकटा	25/11/2026
मंगला	15/12/2026

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			05:18:35	मेष	अश्विनी	2	केतु	मंगल	---	0:00			
सूर्य			16:23:12	कन्या	हस्त	2	चंद्र	शनि	सम राशि	1.06	मातृ	पितृ	अतिमित्र
चंद्र			28:40:43	मक	धनिष्ठा	2	मंगल	शनि	सम राशि	1.43	आत्मा	मातृ	जन्म
मंगल			13:23:54	तुला	स्वाति	3	राहु	बुध	सम राशि	1.25	पुत्र	भ्रातृ	सम्पत
बुध		अ	00:59:52	तुला	चित्रा	3	मंगल	बुध	मित्र राशि	1.15	कलत्र	ज्ञाति	जन्म
गुरु			28:33:04	मिथु	पुनर्वसु	3	गुरु	शुक्र	शत्रु राशि	1.16	अमात्य	धन	विपत
शुक्र			23:00:57	सिंह	पू०फाल्गुनी	3	शुक्र	शनि	शत्रु राशि	1.29	भ्रातृ	कलत्र	वध
शनि	व		03:20:51	मीन	उ०भाद्रपद	1	शनि	शनि	सम राशि	0.92	ज्ञाति	आयु	क्षेम
राहु			24:00:47	कुंभ	पू०भाद्रपद	2	गुरु	बुध	मित्र राशि		---	ज्ञान	विपत
केतु			24:00:47	सिंह	पू०फाल्गुनी	4	शुक्र	बुध	शत्रु राशि		---	मोक्ष	वध

लग्न-चलित

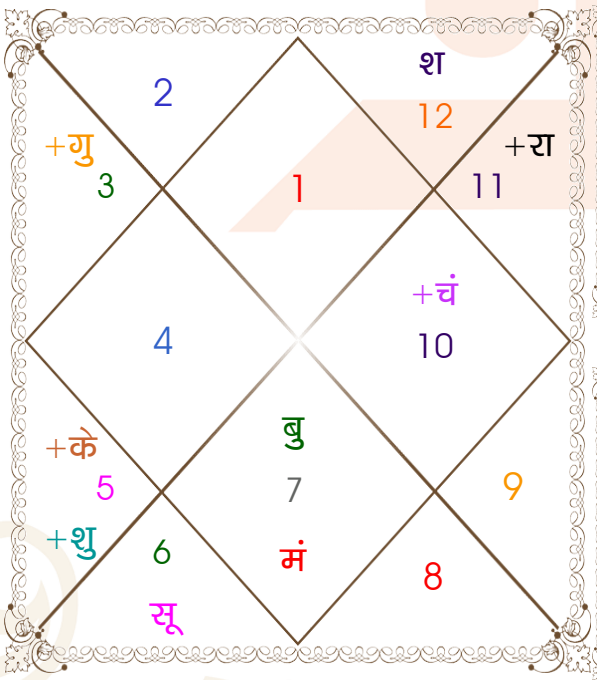

चन्द्र कुंडली

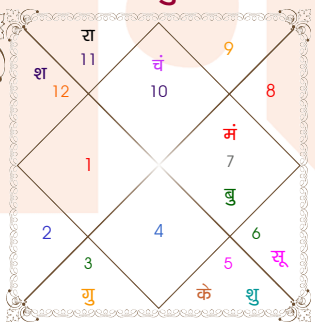

नवमांश कुंडली

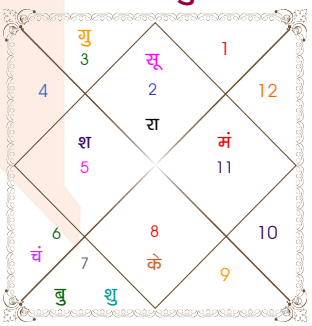

सर्वाष्टकवर्ग

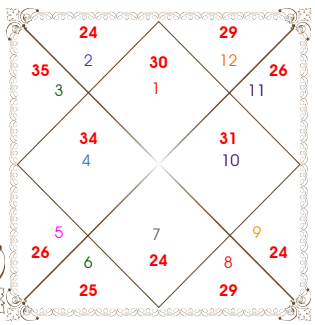

दशमांश कुंडली

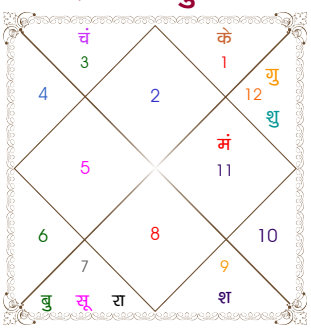

नक्षत्रफल

आपका जन्म धनिष्ठा नक्षत्र के द्वितीय चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्मराशि मकर तथा राशिस्वामी शनि होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण वैश्य, वर्ग मार्जार, गण राक्षस, नाड़ी मध्य तथा योनि सिंह होगी। नक्षत्र के द्वितीय चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "गि" या "गी" अक्षर से होगा। यथा- गिरीश, गिरजाशंकर आदि

आप एक आदर्श पुरूष होंगे तथा हमेशा सदाचारी जीवन व्यतीत करेंगे। आपका उत्तम चरित्र अन्य लोगों के लिए अनुकरणनीय तथा प्रशंसनीय रहेगा। साथ ही आप एक व्यवहार कुशल व्यक्ति भी होंगे तथा अन्य जनों से अत्यन्त ही मधुर तथा मैत्रीपूर्ण व्यवहार सम्पन्न करेंगे जिससे सभी लोग आपके व्यवहार कुशलता से प्रभावित होंगे तथा अधिकाँशतया आपकी बातों से सहमत रहेंगे। धन सम्पत्ति का आपके पास अभाव नहीं रहेगा एवं धनाढ्य पुरूष के रूप में जाने जाएंगे। आप में शारीरिक बल पूर्ण रूप से विद्यमान रहेगा तथा इसका अभाव नहीं रहेगा। आप के मन में दया एवं करूणा की भावना भी विद्यमान रहेगी अतः जरूरत मन्द लोगों तथा दीन दुःखियों के प्रति आपकी विशेष कृपादृष्टि रहेगी एवं यथाशक्ति आप उनका सहयोग करेंगे। इसके साथ ही समाज में आप एक प्रभावशाली पुरूष होंगे तथा दूर दूर तक आपकी ख्याति रहेगी।

आचारदातादरचारूशीलो धनाधिशाली बलवान् कृपालुः।
यस्य प्रसूतौ च भवेद्धनिष्ठा महाप्रतिष्ठो सहितः नरः स्यात्।।
जातकाभरणम्

अर्थात् धनिष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक श्रेष्ठ आचरण वाला, व्यवहार कुशल, धनाढ्य, बलवान, दयालु और अतिप्रतिष्ठा वाला होता है।

आप जिन्दगी में कभी हताश नही होंगे तथा हमेशा आशान्वित रहेंगे। इससे आप अल्प मात्रा में मानसिक कष्टानुभूति करेंगे। आप जीवन में समस्त भौतिक एवं सांसारिक सुखसंसाधनों से युक्त होकर उनका प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे।

आशालुर्वसुमान वसूद्रुजनिः पीनोरूकंठः सुखी।
जातक परिजातः

अर्थात् धनिष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक आशान्वित, धनी, मोटी जांघ तथा कंठ वाला एवं सुखी होता है।

संगीत शास्त्र के प्रति आप की तीव्र रूचि रहेगी तथा इसका विस्तृत ज्ञान प्राप्त करने में आप हमेशा तत्पर रहेंगे। साथ ही इस क्षेत्र में विशेष योग्यता एवं प्रसिद्धि भी प्राप्त कर सकेंगे। सभी परिवारिक जनों तथा अन्य बन्धु बाधवों के मध्य आप सम्माननीय तथा आदरणीय समझे जाएंगे। इसके अतिरिक्त आपको नाना प्रकार के कीमती सोने आदि के आभूषणों की भी प्राप्ति हो सकती हैं। साथ ही आप अपने नगर या क्षेत्र में एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा

सभी जन आपकी आज्ञा का पालन करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं आपका हार्दिक सम्मान भी करेंगे।

गीतप्रियो बन्धुमान्यो हेमरत्नैरलंकृतः।
जातो नरो धनिष्ठायाम् शतैकस्यपतिर्भवेत।।
मानसागरी

अर्थात् धनिष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक गान विद्या का प्रेमी, परिवार में सम्मानित, सुवर्ण मोती आदि रत्नों के आभूषणों से सुशोभित एवं सैकड़ों आदमियों का अधिपति होता है।

आप में दानशीलता का भाव प्रारम्भ से ही विद्यमान रहेगा। अतः दीन दुःखियों तथा जरूरत मन्द लोगों तथा संस्थाओं के प्रति आप अपनी इस प्रवृति का प्रायः प्रदर्शन करते रहेंगे। आप में शौर्य गुण सर्वथा विद्यमान रहेगा तथा साहस एवं निर्भीकता से अपनी समस्याओं का समाधान करेंगे। साथ ही धन के प्रति भी आपके मन में लोलुपता का भाव रहेगा इससे कभी कभी आपको परेशानी भी होगी।

दाता आढ्यः शूरोगीतप्रियो धनिष्ठासु धन लुब्धः।
बृहज्जातकम्

अर्थात् धनिष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक दानी, धनी, शूरवीर, गीतप्रिय और धन का लोभी होता है।

ताम्र पाद में उत्पन्न होने के कारण आप राज्य या सरकार से धन लाभ अर्जित करने में हमेशा सफल रहेंगे तथा समाज में दूर दूर तक आपकी ख्याति व्याप्त रहेगी। देखने में आपका सौन्दर्य आकर्षक रहेगा। आप सन्तोषी प्रवृति के होंगे तथा अनावश्यक इच्छाओं को मन में उत्पन्न नहीं करेंगे। आप श्रेष्ठ आचरण से युक्त रहेंगे तथा सभी लोग आपका आदर सत्कार करेंगे। विविध प्रकार की धन सम्पतियों तथा सुखसंसाधनों से आप युक्त रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। माता पिता के प्रति आपकी पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा इनसे भी आप पूर्ण धन सम्पति को प्राप्त करेंगे। आप एक विद्वान पुरूष होंगे तथा ज्ञानार्जन में आपकी विशेष रूचि रहेगी। आप अपने द्वारा प्रारम्भ कार्यों में शीघ्र ही सफलता अर्जित करेंगे तथा नाना प्रकार के वाहन एवं भूमि से भी युक्त रहकर प्रसन्न रहेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धाभाव रहेगा। आप एक पराक्रमी पुरूष भी होंगे। आप में परोपकार की भावना भी रहेगी तथा सज्जन पुरूषों का आप नित्य आदर करेंगे। इसके अतिरिक्त आप में दानशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा।

मकर राशि में जन्म लेने के कारण आपका कद ऊँचा तथा मस्तक विशालता से युक्त रहेगा। आपके नेत्र सुन्दर होंगे तथा शारीरिक स्वरूप भी आकर्षक रहेगा। गीत शास्त्र के प्रति आपकी हार्दिक रूचि रहेगी तथा प्रयत्नपूर्वक आप इसका ज्ञानार्जन करने में सफल रहेंगे। साथ इस क्षेत्र में आप यश भी प्राप्त करेंगे। शीत से आप को व्याकुलता की अनुभूति होगी एवं इसे सहन करने में आप प्रायः असमर्थ रहेंगे। सत्य के प्रति आपके हृदय में पूर्ण निष्ठा रहेगी

तथा जीवन में इसका अनुपालन करने के लिए आप हमेशा प्रयत्नशील रहेंगे। अन्य लोगों को दिखाने के लिए आप धर्म के प्रति भी श्रद्धाभाव प्रदर्शित करेंगे तथा इसका आचरण भी करते रहेंगे। साथ ही आप समाज में एक सम्माननीय पुरूष होंगे तथा सभी लोग आपको हादिक मान सम्मान प्रदान करेंगे। आप में अल्प मात्रा में क्रोध का भाव भी रहेगा। आपके मन में प्रायः सबके प्रति प्रेम एवं स्नेह का भाव रहेगा तथा घृणा एवं वैमनस्य का अभाव रहेगा आप अपने से अधिक आयु वाले लोगों से मित्रता करना पसन्द करेंगे तथा उन्ही से आपके अधिकाँश घनिष्ठ संबंध रहेंगे। आप लेखन कार्य में भी रूचिशील रहेंगे अतः काव्य सृजन में आप को सफलता मिल सकेगी। आप में उत्साह का भाव भी दृष्टिगोचर होगा तथा स्वभाव में लोलुपता का भी समावेश रहेगा। जिसमे कभी कभी आप आवश्यक समस्याओं का सामना करेंगे।

गीतज्ञः शीतभीरूः पृथुलतरशिराः सत्यधर्मोपसेवी
प्रांशुः ख्यातोळल्परोषो मनसिभवयुतो निर्धृणस्त्यक्तलज्जः।।
चार्वक्षः क्षामदेहो गुरूयुवतिरतः सत्कविवृतजङ्घो
मन्दोत्साहोळतिलुब्धः शाशिनि मकरगे दीर्घकण्ठोळतिकर्णः।।
सारावली

आप अपने परिवार के पालन में हमेशा व्यस्त रहेंगे। आपका कटि भाग पतला होगा। आलस्य का भाव भी आप में रहेगा एवं आपके कार्य शनैः शनैः सम्पन्न होंगे परन्तु भाग्य के प्रबल होने से अधिकाँश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प परिश्रम से ही सम्पन्न हो जाएंगे। आपकी भ्रमण तथा यात्रा करने में भी विशेष रूचि रहेगी अतः अपना अधिकाँश समय इसी में ही व्यतीत करेंगे। आप एक साहसी व्यक्ति भी होंगे एवं कठिन कार्यों तथा अगम्य स्थानों में जाने के लिए भी सदैव तत्पर रहेंगे। आपकी इस निर्भयता से सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आप में कभी कभी कठोरता का भाव भी उत्पन्न होगा जिसका आप अन्य जनों के समक्ष प्रदर्शन करेंगे। आप वात से उत्पन्न रोगों से प्रायः पीडित रहेंगे एवं समय समय पर इससे व्याकुलता की भी अनुभूति करेंगे। इसके अतिरिक्त आप सर्वप्रकार के सत्वगुणों से युक्त होंगे एवं जीवन में इसका अनुपालन करते हुए सुख से रहेंगे।

नित्यं लालयति स्वदारतनयान्धर्मध्वजोळधः कृशः।
स्वक्षः क्षामकटिर्गृहीतवचनः सौभाग्ययुक्तोळलसः।।
शीतालुर्मनुजोळटनश्च मकरे सत्वधिकः काव्यकृत्।।
लुब्धोडगम्यजराङ्गनासु निरतः सन्त्यक्तलज्जोळघृणः।।
बृहज्जातकम्

परिवारिक जनों के मध्य आप सम्मान अर्जित करने में भी सफल रहेंगे तथा कुल परम्परा की अभिवृद्धि करने तथा मर्यादा पालन करने में आपका सर्वाधिक सहयोग रहेगा। स्त्री के आप पूर्ण वश में रहेंगे तथा अपने समस्त सांसारिक कार्यों को आप उसके कथनानुसार या निर्देशानुसार ही सम्पन्न करेंगे। इन समस्याओं का आप स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने में असमर्थ ही रहेंगे। आप को कई शास्त्रों का अच्छा ज्ञान रहेगा। अतः समाज में एक विद्वान के रूप में आपकी छवि रहेगी तथा दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि भी रहेगी। माता के प्रति आपके मन में

विशेष सम्मान रहेगा तथा इनकी आप श्रद्धापूर्वक सेवा करेंगे। आप पुत्र संतति से युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनका सुख प्राप्त करेंगे। भाइयों के प्रति आपके मन में विशेष स्नेह रहेगा तथा समय समय पर उनकी पूर्ण सहायता तथा सहयोग करते रहेंगे। आप एक धनाढ्य पुरूष भी होंगे तथा त्याग की भावना से सर्वदा सुशोभित रहेंगे जिसका परिवार एवं समाज में आप यत्नपूर्वक अनुपालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपका परिवार भी विस्तृत रहेगा एवं सुख के प्रति आप विशेष चिन्तित रहेंगे एवं उसकी प्राप्ति के लिए सदैव प्रयत्नशील भी रहेंगे।

कुले नष्टो वशः स्त्रीणां पंडितः परिवादकः।
गीतज्ञो ललिताग्राहयो पुत्राढ्यो भातृवत्सलः।।
धनी त्यागी सुभृत्यश्च दयालुर्बहुबान्धवः।
परचिन्तितसौख्यश्च मकरे जायते नरः।।
मानसागरी

आपको अपने जीवन काल में किसी अन्य व्यक्ति मित्र या संबंधी की धन सम्पत्ति प्राप्त हो सकती हैं। जिसका आप प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे। साथ ही सामाजिक जनों के कल्याण के लिए भी आप चिन्तित तथा उत्सुक रहेंगे तथा यत्नपूर्वक उनकी भलाई के लिए तत्पर रहेंगे। सलाह या मंत्रणा आदि कार्यों में भी आप दक्ष रहेंगे तथा आपकी इस प्रवृति से अन्य सामाजिक जन भी लाभान्वित होंगे। बन्धुवर्ग का आप पूर्ण लालन पालन करने वाले होंगे तथा वे भी आपको पूर्ण हादिक सम्मान प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आप वीरता के गुणों से सुसम्पन्न रहेंगे तथा साहस पूर्वक अपनी सांसारिक समस्याओं का समाधान करते हुए जीवन यापन करेंगे।

विलसति परनारीं लुब्धसम्पत्ति भोगी।
नरपतिरिव चिन्तो मंत्रवाद प्रशस्तः।।
कृशतनुरतियुक्तो बन्धुवर्गस्य भर्ता।
भवति मकरराशिर्दानवो वीरभावः।।
जातक दीपिका

गीत शास्त्र में प्रबल रूचि होने के कारण आप इस क्षेत्र में विशेष सफलता तथा ख्याति अर्जित करेंगे तथा सभी लोगों से आदर तथा प्रशंसा प्राप्त करेंगे। आपकी शारीरिक कान्ति तथा लावण्यता भी दर्शनीय रहेगी तथा इससे आपका व्यक्तित्व अत्यन्ताकर्षक रहेगा।

कलितशीतभयः किल गीतवित्तनुरूषासहितो मदनातुरः।
निजकुलोत्तमवृतिकरः परं हिमकरे मकरे पुरूषो भवेत्।।
जातका भरणम्

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी कभी कभी अधिक बोलने वाली रहेगी तथा कोमलता की भावना भी आप में अल्प मात्रा में ही रहेगी। परन्तु आप एक साहसी व्यक्ति होंगे। अतः साहस तथा निर्भयता पूर्वक अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को करने में सफल हो जाएंगे। आप में क्रोधाधिक्य का भाव भी रहेगा एवं इसका भी आप समय समय पर अन्य जनों

के समक्ष प्रदर्शन करते रहेंगे। आपमें शारीरिक बल भी पूर्ण रूप से विद्यमान रहेगा एवं अन्यजनों से आपका विवाद आदि भी होता रहेगा। साथ ही समाज में कई लोगों से आपका विरोध का भाव भी रहेगा।

जीवन में यदा कदा आप उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी ग्रसित हो सकते हैं। साथ ही आपका सौन्दर्य भी सामान्य होगा। इसके अतिरिक्त आप अपने सम्भाषण में कठोर शब्दों का भी उपयोग करेंगे जिससे अन्य लोग आपसे अप्रसन्न रहेंगे। अतः अपने वार्तालाप में यत्नपनर्वक मधुर शब्दों का प्रयोग कृें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगडू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

सिंह योनि में जन्म होने के कारण आप एक धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा धर्म के प्रति आपके मन में अपूर्ण निष्ठा रहेगी। साथ ही इससे नियमपूर्वक अनुपालन में भी आप यत्नपूर्वक तत्पर रहेंगे। आपकी प्रवृति अच्छे तथा अन्य लोगों की भलाई करने के कार्यों के प्रति रहेगी। अतः अन्य जन भी आपके सत्कार्यों से प्रसन्न रहेंगे एवं उनसे लाभान्वित भी होंगे। साथ ही आप एक गुणवान पुरूष भी होंगे एवं समस्त सद्गुणों से युक्त रहकर सामाजिक मान सम्मान तथा आदर प्राप्त करेंगे। परिवार की सुख समृद्धि के प्रति भी आपकी चिन्ता रहेगी तथा यत्नपूर्वक इसकी वृद्धि के लिए आजीवन आप उद्यत रहेंगे तथा प्रयत्नपूर्वक इसकी उन्नति आपके द्वारा होती रहेगी।

स्वधर्मे तु सदाचारसत्क्रियासद्गुणान्वितः।
कुटुम्बस्य समुद्धर्ता सिंहयोनिभवो नरः।।
मानसागरी

अर्थात् सिंहयोनि में उत्पन्न जातक अपने धर्म में सच्चा आचार-व्यवहार वाला, अच्छी क्रिया एवं अच्छे गुणों से सम्पन्न और परिवार का उद्धार करता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा दशम भाव में स्थित है। अतः आप माता के प्रिय रहेंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घायु होगी। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा सुखसंसाधनों से वे युक्त रहेंगी एवं आपको जीवन में उन सभी सुखों से परिपूर्ण करने के लिए यत्नशील रहेंगी। उनके सहयोग से ही आप जीवन में नौकरी, व्यापार तथा यश को प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

आप भी उनके प्रति श्रद्धावान रहेंगे एवं एक आज्ञाकारी पुत्र की तरह उनकी आज्ञा का पूर्ण रूप से अनुपालन करेंगे। जीवन में उनकी सेवा सुविधा का आप पूर्ण ध्यान रखेंगे

तथा यत्नपूर्वक उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग करते रहेंगे। आपके संबंध भी अच्छे रहेंगे एवं विचारों में विभिन्नता अल्प मात्रा में ही रहेगी। इस प्रकार एक दूसरे के लिए आप सामान्यतया शुभ ही रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य छठे भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा आयु भी अच्छी होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। इसके साथ ही वे आपको शत्रुओं तथा अन्य सांसारिक कष्टों से नित्य सुरक्षित रखने के लिए भी तत्पर रहेंगे।

आप भी उनका हमेशा हार्दिक सम्मान करेंगे एवं नित्य उनकी आज्ञा पालन करने में भी तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे कुछ समय के लिए संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु उसके बाद सब कुछ सामान्य एवं पूर्ववत् हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उन्हें हमेशा वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता करते रहेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

आपके जन्म काल में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी वे अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान की भावना व्याप्त रहेगी तथा हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह संबंधी या व्यापार संबंधी कार्यों में भी वे अपना यथाशक्ति योगदान देंगे तथा सदैव आपकी सफलता की कामना करेंगे। इसके साथ ही सुख दुःख में वे आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनको समस्त महत्वपूर्ण कार्यों एवं क्षेत्रों में अपना सहयोग प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उसमें तनाव या कटुता आएगी परन्तु कुछ समय पश्चात् सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही उनकी शादी या व्यापार आदि कार्यों में भी आप उनकी वांछित सहायता करते रहेंगे।

आपके लिए वैशाख मास, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी तिथियां, रोहिणी नक्षत्र, वैधृतियोग, शकुनि करण, मंगलवार, चतुर्थ प्रहर तथा सिंह राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 अप्रैल से 14 मई के मध्य 4,9,14 तिथियों, रोहिणी नक्षत्र, वैधृतियोग तथा शकुनि करण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करे अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही मंगलवार चतुर्थ प्रहर एवं सिंह राशिस्थ चन्द्रमा को भी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में प्रायः वर्जित ही रखें। इसके अतिरिक्त इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के प्रति भी विशेष सावधान रहना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अनुकूल नहीं चल रहा हो मानसिक परेशानी, शारीरिक

व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में असफलता तथा अन्य शुभ कार्यों में बाधाएं उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव नृसिंह भगवान की उपासना करनी चाहिए तथा शनिवार के उपवास भी करने चाहिए। साथ ही सोना, नीलम, पंचधातु, लोहा, तिल, तेल, कम्बल तथा चर्मपादुकाएं आदि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक किसी योग्य सुपात्र को दान करना चाहिए। ऐसा करने से आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अन्य क्षेत्रों में समस्त अशुभ प्रभाव समाप्त होकर शुभ फलों में वृद्धि होगी। साथ ही सर्वत्र लाभ मार्ग भी प्रशस्त होंगे। इसके अतिरिक्त किसी सुयोग्य विद्वान से शनि के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 19000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए इससे आपके लाभमार्ग प्रशस्त होंगे तथा शुभ फलों में भी वृद्धि होगी।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।